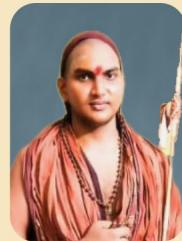


हर हर शङ्कर

जय जय शङ्कर

ॐ



श्री-वेदव्यासाय नमः

श्रीमद्-आद्य-शङ्कर-भगवत्पाद-परम्परागत-मूलान्नाय-
सर्वज्ञ-पीठम्
श्री-काश्ची-कामकोटि-पीठम्
जगद्गुरु-श्री-शङ्कराचार्य-स्वामि-श्रीमठ-संस्थानम्

गो-पूजा



गावो विश्वस्य मातरः एन्ऱवाऱु मनीत इनत्तीनर अणेवरुक्कुम तायेप्पे पोल्ल पाल्ल केाटुप्पताल्ल अणेवरुक्कुम ताय्य संतानत्तील उल्लाण पसक्कल्ल.

“पसक्कल्ल इयर्केयिलेये तनतु कन्ऱुकगुक्कु मट्टुमिऩ्ऱ मनीतर्कगुक्काकवुम चेर्न्तु कुरक्किन्ऱन” एन्ऱु वेतम् चेाल्किऱतु. “ऐ पसक्कलो! नलिन्तवणे पुळ्डियुल्लावणाक आक्कुकीर्हर्कल्ल. असत्तत्तेत सुत्तम आक्कुकीर्हर्. उम्मेमप्पे बेरीयोर्कल्ल पुक्कुवार्कल्ल. एन्कल्ल वीट्टेत उमतु कुरलाल मन्कलामाक्कुवीर्कल्ल!” एन्ऱुम वेतम् पोर्हि प्रार्त्तिक्किऱतु. “पस अणेवरुक्कुम नन्पन्न” एन्ऱुम चेाल्किऱतु.

वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा

9884655618

8072613857



vdspsabha@gmail.com



vdspsabha.org

ଲୀଟ୍ ଟିଲ୍ ତୁଳାଚିଯମ ପଶୁମ ଇରୁପ୍ପତୁ ଅବସିଯମ. ଇଲ୍‌ବିରଣ୍ଣନ୍ତୁମ ଇରୁନ୍ତତାଳ୍ ଲକ୍ଷଣିଯେ ବାସମ ଚେଯକିରାଳି. ପଶୁବିନ୍ ଶରୀରତିଲ୍ ଲକଳ ତେବେତେକଣ୍ଠୁମ ଇରୁପ୍ପତୋକ ଚାଲୁତ୍ରମ ଚୋଲକିରତୁ.

ଚମ୍ୟ ଚନ୍ଦ୍ରପପନ୍ଧକଳ୍ କାରଣମାକ ଅନେନ୍ଦ୍ରାକୁମ ଇଣ୍ଟୁ ଲୀଟ୍ ଟିଲ୍ କୋ ଲମ୍ବରକଣ୍ଠନାମ ଚେଯ୍ ଇଯଲୁବତିଲାଲ. ଇତର୍କୁ ଗୋପକାର୍ତ୍ତମାକ ଲୀଟ୍ ଟୁ ପୁଜେଇୟିଲ୍ କନ୍଱ୁଟାନ୍ କୁଣ୍ଡିଯ ପଶୁବିନ୍ ପ୍ରତିମେ ଅଲ୍ଲତୁ ପଟମାଵତୁ ଘେବତୁକୁକେକାଳିଲାମ.

“ଯାବର୍କକୁମାମ ପଶୁକକୋରୁ ବାଯୁରୈ” ଏଣ୍଱ର ତିରୁମନ୍ତିରପ୍ପାତି ପଶୁକକୁ ଛୁରୁ କେପପିଟି ପୁଲ୍ କୋଟୁକକୁମ ଲୀରିମେଯାନ ତର୍ମତ୍ତତେ ମିକବୁମ ପୋର୍ତ୍ତିଯୁଳାର୍କଳ୍ ନମ ମୁନ୍ନୋର୍କଳ୍. ନମତୁ ପିରନ୍ତ ନାଳ୍ ମୁତଲିଯ ତରୁଣନ୍ତକଣିଲ୍, ଏଣ୍ ଇଯନ୍ତରପୋତେଲଲାମ ଅରୁକିଲୁଳୀଳା ପଶୁମଟତିର୍କୁଚ ଚେଣ୍ଟୁ ପଶୁକକଣ୍ଠୁକୁ ପୁଲ୍, ଅକତ୍ତିକକୀରେ ମୁତଲିଯବର୍ତ୍ତରୈ ବାନ୍ଧକିକେକାଟୁତୁ ନାମ ପୁଣ୍ୟଚାଲିକଳାକଳାମ.

ଲୁର୍ଯ୍ୟଣେ ବଣାନ୍କି ଅ଱ୁବଟେକୁ ନନ୍ଦି ଚୋଲିଲୁମ ପଣ୍ଡିକେ ପୋଙ୍କଳ. ଇତଣେ ଛୁଟ୍ଟି ବିବଶାୟତୁଟାନ୍ ଇଣ୍ଣେପିରିଯାତ ପଶୁକଳ୍ ମର୍ରୁମ କାଳେକଳେ ନାମ ବ୍ୟାପକୁକିରୋମ. ପଞ୍ଚୟ କ୍ୟିରୁକଳ୍ ମାର୍ତ୍ତି, କୁଳିପପାଟ୍ଟି, ମଞ୍ଚଳୀ ପୁଷି, ତିଲକମିଟ୍ଟୁ, ଅଲଙ୍କରିତୁ ପୁଜୀପ୍ପତୁ ନମତୁ ପାରମପରିଯମ.

ବେଳିକିମ୍ବମେକଣିଲୋ ଅଲ୍ଲତୁ ଏପିବାମୁତୁ ବେଣ୍ଟୁମାନାଲୁମ କୋ ପୁଜେ ଚେଯ୍ ଲାମ. କୋ ତାନମ ଚେଯ୍ ବତର୍କୁ ମୁନ୍ କୋବେ ପୁଜିତୁ ବିଟ୍ଟେ କୋଟୁକକ ବେଣ୍ଟୁମ. ମଟନ୍କଣିଲ୍, ଆଲ୍ୟନ୍କଣିଲ୍ ନିତ୍ୟମେ କୋ ପୁଜେ ଉଣ୍ଟୁ.

ଇତକେଯ ଶିରପ୍ପୁଟେଯ କୋ ପୁଜେଇୟ ନାମ ଚେଯ୍ ଇନ୍ତ କୋପପିଲ୍ ମୁତଲିଲ ଲକୁବାନ ପତ୍ତତିଯମ ପିରକୁ କୋ-ରକ୍ଷଣ-ପୁରମ କୀତା ଅଚସକତତାରିନ୍ “କଲ୍ୟାଣ୍” ପତ୍ତିରିକେଯିନ୍ 1995 କୋ ଶେବା ମଲରିଲ ପକକମ୍ 398 ମୁତଳ ଉଳ୍ଳାପାତି ବିଲ୍ସତାରମାନ ପତ୍ତତିଯମ କୋଟୁକପପଟ୍ଟୁଳାନ. ଇତର୍କୁମ ମୁଲମାନ ପୁରାଣାତି ଶ୍ଲୋକଙ୍କଳ୍ ଗ୍ରୌ ନିତ୍ୟାନନ୍ତ ପନ୍ତ ତୋରୁତ୍ତ ଲମ୍ବିକାର ତୀପକମ୍ 3ମ ପକୁତି (ଶେଳକମ୍ପା, କାଶି, 1951) କୋତାନ ପରକରଣତତିଲିରୁନ୍ତୁମ, ବିଷ୍ଣୁତର୍ମୋତ୍ତର ପୁରାଣମ (କାଶି ମୁମୁକ୍ଷୁର ପବନିଲ ଶେକରିକପପଟ୍ଟତୁ, ବେଳିଯ୍ଦୁ ବିଵରମ ତେରିଯବିଲାଲ) ପୁତ୍ତକତତିଲିରୁନ୍ତୁମ କୋଟୁକପପଟ୍ଟୁଳାନ. ଇତକେଯ ଲୁତ୍ତିବିଷ୍ଣୁନ୍ଦରିଯମ ବେଳିଯିଟ୍ଟ ଅନେତତୁ ଲୁତ୍ତିନ୍ଦରିଯମ ନମତୁ କରୁତଜ୍ଜୁତେ ଉରିଯତୁ.

ଅବରବର୍କଳ୍ ଚକ୍ରତିକକେରରବାରୁ କୋ ପୁଜେ ଚେଯ୍ କୋ ମାତା ମର୍ରୁମ

ଵେଦ-ଧର୍ମ-ଶାସ୍ତ୍ର-ପରିପାଳନ-ସଭା

📞 9884655618 ➡️ 8072613857 ➡️ vdspsabha@gmail.com ➡️ vdspsabha.org

ఆచార్యాలిను కురుపెక్కు పాత్తిర్రకణాకుమపది కేట్టుకెకాంకిరోమ.

As per the saying **गावो विश्वस्य मातरः**, cows have the status of mothers because they give milk to all humans, like mothers.

The Veda says “Cows naturally produce milk not only for their calves but humans also”. The Veda also praises and prays saying “O cows! You make the weakened well-nourished. You make the unclean clean. Elders praise you. Make our homes auspicious by your voices!” It also says “Cow is everyone’s friend”.

Cow and Tulasi should definitely be in a home. If both of these are present, Lakshmi Herself will reside. The shastra says that all devatas live in the body of a cow.

Due to times and situations, not everyone is able to do Go Samrakshanam at home today. To keep this in mind, one may at least place a vighraha or picture of a cow with calf in the home puja.

Our ancestors have very much praised the simple dharma of giving a handful of grass to cows as it is said in the Tirumandiram “yāvarkkumām pasuvukku oru vāyurai”. On occasions such as our birthdays, why whenever we can, let us go to the nearby goshala, and buy and give grass and agasti (Tam: agatti, Tel: avisa, Kan: agase) leaves etc and thereby attain punya!

Pongal is the festival of worshipping Surya and expressing gratitude for the harvest. Along with this, we worship cows and bulls which are inseparable from agriculture. Our tradition is to change their old ropes, bathe them, apply turmeric, anoint with tilaka, and do puja.

One can do Go Puja on Fridays or whenever one wishes. One should do Go Danam only after doing puja to the cow. Go Puja is done daily in mathams and temples.

To do such a special Go Puja, in this document we give first a laghu paddhati and then a more detailed paddhati as presented from page 398, Go Seva Ank, Kalyan Patrika, Gita Press, “Go”-rakh-pur, 1995. The verses from puranas etc. as source for the above are given from Godana Prakarana of Samskara Dipaka by Shri Nityananda Pant part 3 (Chaukhamba, Kashi, 1951)

वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा

and Vishnudharmottara Purana book (Kashi Mumukshu Bhavan collection, publication details not known). Our gratitude is due to all the sajjana-s who published such sadvishaya-s.

We request all to do Go Puja as per their ability and receive the benevolence of Go Mata and Acharyas.

॥ प्रधान-पूजा ॥

(आचम्य)

[विघ्नेश्वरपूजां कृत्वा ।]

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥

प्राणान् आयम्य। (अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षय-द्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्य ब्रह्मणः द्वितीय-परार्द्धे श्वेतवराह-कल्पे वैवस्वत-मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बू-द्वीपे भारत-वर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकाणां प्रभवादीनां षष्ठाः संवत्सराणां मध्ये

२०२६-Jan-१५ (THU) / ५१२७-मकरः-२ (गुरुः) - दृग्गणितानुसारेण

विश्वावसु-नाम-संवत्सरे उत्तरायणे हेमन्त-ऋतौ मकर-पौष-मासे कृष्ण-पक्षे द्वादशयां शुभतिथौ गुरुवासरयुक्तायां ज्येष्ठा-नक्षत्रयुक्तायां वृद्धि-योगयुक्तायां कौलव-करण (०७:०७; तैतिल-करण)युक्तायाम् एवं-गुण-विशेषण-विशिष्टायाम् अस्यां द्वादशयां

२०२६-Jan-१६ (FRI) / ५१२७-मकरः-२ (भूगुः) - वाक्यगणितानुसारेण

विश्वावसु-नाम-संवत्सरे उत्तरायणे हेमन्त-ऋतौ मकर-पौष-मासे कृष्ण-पक्षे त्रयोदशयां शुभतिथौ भृगुवासरयुक्तायां मूल-नक्षत्रयुक्तायां ध्रुव-योगयुक्तायां गरजा-करण (१०:०९; वणिजा-करण)युक्तायाम् एवं-गुण-विशेषण-विशिष्टायाम् अस्यां त्रयोदशयां

शुभतिथौ श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम्

○ अस्मिन् भारत-देशो गो-सम्पदः विशेषतः भारतीय-गो-जातीनाम् अभिवृद्धर्थम्

वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा

9884655618

8072613857

vdspsabha@gmail.com

vdspsabha.org

- जनानां गो-विषये श्रद्धा-भक्ति-प्राप्त्यर्थम्
- गो-वध-निवृत्यर्थं तद्-विरुद्ध-शासन-नियम-सिद्धर्थम्
- गवाम् अन्येषां च चतुष्पदां द्विपदां च सर्व-विध-व्याधि-परिहार-द्वारा अरोग-
जीवन-अवाप्त्यर्थम्
- गवां समृद्ध-क्षीर-प्रदत्त्वार्थम्
- काले काले निकामं वृष्टि-प्राप्त्यर्थं, तद्-द्वारा धान्यानाम् अन्येषां च सप्रयोजनानां
सस्यानां वृक्षाणां च अभिवृद्धर्थम्
- जनानां परिसरस्य स्वच्छतया सुषुप्तया परिपालने श्रद्धायाः उदयार्थम्
- तद्-द्वारा पञ्च-महाभूतानां प्रदूषण-परिहार-द्वारा पृथिव्याः ताप-शान्त्यर्थम्
- भगवतः गोपालस्य भगवतः वृषभध्वजस्य च अनुग्रहेण लोके सर्वत्र साधूनां
परित्राणार्थं, दुष्कृतां च सद्बुद्धि-प्राप्त्यर्थं, धर्मस्य अभ्युत्थानार्थं जयार्थम्, अधर्मस्य
गलान्यर्थं नाशार्थम्
- जनानां प्राणिषु परस्परं च सद्गावनार्थं, विश्वस्य कल्याणार्थं, गोमातुः जयार्थं
- जनानां सुख-शान्त-समृद्ध-जीवनार्थम्

सवत्स-गोमातृ-पूजां करिष्ये। तद्भूँ कलशपूजां च करिष्ये।
[कलशपूजां कृत्वा।]

॥ लघु-प्रयोगः ॥

विस्तृत-प्रयोगः (५ पृ ९)

नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च।
नमो ब्रह्म-सुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः ॥

गवाम् अङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश।
यस्मात् तस्माच्छ्विं मे स्यादिह लोके परत्र च ॥

गोमातरं ध्यायामि। गोमातरम् आवाहयामि।

वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा

📞 9884655618 ➡️ 8072613857 ➡️ vdspsabha@gmail.com ➡️ vdspsabha.org

गोमात्रे नमः, आसनं समर्पयामि।
 गोमात्रे नमः, पाद्यं समर्पयामि।
 गोमात्रे नमः, अर्ध्यं समर्पयामि।
 गोमात्रे नमः, आचमनीयं समर्पयामि।
 गोमात्रे नमः, मधुपर्कं समर्पयामि।
 गोमात्रे नमः, स्नपयामि। स्नानोत्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।
 गोमात्रे नमः, वस्त्रं समर्पयामि।
 गोमात्रे नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।
 गोमात्रे नमः, दिव्य-परिमल-गन्धान् धारयामि।
 गन्धस्योपरि हरिद्रा-कुङ्कुमं समर्पयामि।
 गोमात्रे नमः, अक्षतान् समर्पयामि। पुष्टैः पूजयामि।

॥ श्री-लक्ष्म्यष्टोत्तरशत-नामावलिः ॥

ॐ प्रकृत्यै नमः
 ॐ विकृत्यै नमः
 ॐ विद्यायै नमः
 ॐ सर्व-भूत-हित-प्रदायै नमः
 ॐ श्रद्धायै नमः
 ॐ विभूत्यै नमः
 ॐ सुरभ्यै नमः
 ॐ परमात्मिकायै नमः
 ॐ वाचे नमः
 ॐ पद्मालयायै नमः
 ॐ पद्मायै नमः
 ॐ शुचये नमः
 ॐ स्वाहायै नमः

१०

ॐ स्वधायै नमः
 ॐ सुधायै नमः
 ॐ धन्यायै नमः
 ॐ हिरण्मय्यै नमः
 ॐ लक्ष्म्यै नमः
 ॐ नित्य-पुष्टायै नमः
 ॐ विभावर्यै नमः
 ॐ अदित्यै नमः
 ॐ दित्यै नमः
 ॐ दीप्तायै नमः
 ॐ वसुधायै नमः
 ॐ वसु-धारिण्यै नमः
 ॐ कमलायै नमः

२०

^१पाठान्तरम् - कामाक्ष्यै नमः, क्रोध-सम्भवायै नमः

वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा

9884655618

8072613857

vdspsabha@gmail.com

vdspsabha.org

हर हर शङ्कर

ॐ कान्तायै नमः	7
ॐ कामायै नमः ¹	
ॐ क्षीरोद-सम्भवायै नमः	
ॐ अनुग्रह-प्रदायै नमः	30
ॐ बुद्ध्ये नमः	
ॐ अनधायै नमः	
ॐ हरि-वल्लभायै नमः	
ॐ अशोकायै नमः	
ॐ अमृतायै नमः	
ॐ दीपायै नमः	
ॐ लोक-शोक-विनाशिन्यै नमः	
ॐ धर्म-निलयायै नमः	
ॐ करुणायै नमः	
ॐ लोक-मात्रे नमः	40
ॐ पद्म-प्रियायै नमः	
ॐ पद्म-हस्तायै नमः	
ॐ पद्माक्ष्यै नमः	
ॐ पद्म-सुन्दर्यै नमः	
ॐ पद्मोद्धवायै नमः	
ॐ पद्म-मुख्यै नमः	
ॐ पद्मनाभ-प्रियायै नमः	
ॐ रमायै नमः	
ॐ पद्म-माला-धरायै नमः	
ॐ देव्यै नमः	50
ॐ पद्मिन्यै नमः	
ॐ पद्म-गन्धिन्यै नमः	
ॐ पुण्य-गन्धायै नमः	
ॐ सुप्रसन्नायै नमः	
ॐ प्रसादाभिमुख्यै नमः	
ॐ प्रभायै नमः	

जय जय शङ्कर

ॐ चन्द्र-वदनायै नमः	
ॐ चन्द्रायै नमः	
ॐ चन्द्र-सहोदर्यै नमः	
ॐ चतुर्भुजायै नमः	60
ॐ चन्द्र-रूपायै नमः	
ॐ इन्द्रियायै नमः	
ॐ इन्दु-शीतलायै नमः	
ॐ आह्लाद-जनन्यै नमः	
ॐ पुष्ट्यै नमः	
ॐ शिवायै नमः	
ॐ शिव-कर्यै नमः	
ॐ सत्यै नमः	
ॐ विमलायै नमः	
ॐ विश्व-जनन्यै नमः	70
ॐ तुष्ट्यै नमः	
ॐ दारिद्र्य-नाशिन्यै नमः	
ॐ प्रीति-पुष्करिण्यै नमः	
ॐ शान्तायै नमः	
ॐ शुक्ल-माल्याम्बरायै नमः	
ॐ श्रियै नमः	
ॐ भास्कर्यै नमः	
ॐ बिल्व-निलयायै नमः	
ॐ वरारोहायै नमः	
ॐ यशस्विन्यै नमः	80
ॐ वसुन्धरायै नमः	
ॐ उदाराङ्गायै नमः	
ॐ हरिण्यै नमः	
ॐ हेम-मालिन्यै नमः	
ॐ धन-धान्य-कर्यै नमः	

वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा

9884655618

8072613857



vdspsabha@gmail.com



vdspsabha.org

ॐ सिद्ध्यै नमः
ॐ स्त्रैण-सौम्यायै नमः
ॐ शुभ-प्रदायै नमः
ॐ नृप-वेश्म-गतानन्दायै नमः
ॐ वर-लक्ष्म्यै नमः ९०
ॐ वसु-प्रदायै नमः
ॐ शुभायै नमः
ॐ हिरण्य-प्राकारायै नमः
ॐ समुद्र-तनयायै नमः
ॐ जयायै नमः
ॐ मङ्गलायै देव्यै नमः

ॐ विष्णु-वक्षः-स्थल-स्थितायै नमः
ॐ विष्णु-पत्न्यै नमः
ॐ प्रसन्नाक्ष्यै नमः
ॐ नारायण-समाश्रितायै नमः १००
ॐ दारिद्र्य-ध्वंसिन्यै नमः
ॐ देव्यै नमः
ॐ सर्वोपद्रव-हारिण्यै नमः
ॐ नव-दुर्गायै नमः
ॐ महा-काल्यै नमः
ॐ ब्रह्म-विष्णु-शिवात्मिकायै नमः
ॐ त्रि-काल-ज्ञान-सम्पन्नायै नमः
ॐ भुवनेश्वर्यै नमः १०८

॥ इति श्री-लक्ष्म्यष्टोत्तरशत-नामावलिः सम्पूर्णा ॥



गोमात्रे नमः, नाना-विध-परिमल-पत्र-पुष्पाणि समर्पयामि।
गोमात्रे नमः, धूपम् आघ्रापयामि।
गोमात्रे नमः, दीपं दर्शयामि।
गोमात्रे नमः, अमृतं महानैवेद्यं पानीयं च निवेदयामि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।
गोमात्रे नमः, कर्पूर-ताम्बूलं समर्पयामि।
गोमात्रे नमः, मङ्गल-नीराजनं दर्शयामि।
गोमात्रे नमः, प्रदक्षिण-नमस्कारान् समर्पयामि।

गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः।
गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्॥

गावः स्वर्गस्य सोपानं गावो धन्याः सनातनाः।
सर्वे देवास्तनौ यस्याः सा धेनुर्वरदाऽस्तु मे॥

वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा

9884655618

8072613857



vdspsabha@gmail.com



vdspsabha.org

लक्ष्मीर्या लोक-पालानां धेनु-रूपेण संस्थिता।
घृतं वहति यज्ञार्थे मम पापं व्यपोहतु॥
गोमात्रे नमः, प्रार्थनाः समर्पयामि।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि ॥
अनेन पूजनेन गोमाता प्रीयताम्।

ॐ तत् सद् ब्रह्मार्पणमस्तु।

धर्म की जय हो! अधर्म का नाश हो! प्राणियों में सद्ग्रावना हो! विश्व का कल्याण हो! गौ हत्या बन्द हो! गौ माता की जय हो!
(- पूज्य करपात्र स्वामी जी)



॥ विस्तृत-प्रयोगः ॥

ध्यानम्।

नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च।
नमो ब्रह्म-सुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः ॥

गवाम् अङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश।
यस्मात् तस्माच्छ्विं मे स्यादिह लोके परत्र च ॥

गोमातरं ध्यायामि।

आवाहनम्।

आवाहयाम्यहं देवीं गां त्वां त्रैलोक्य-मातरम्।
यस्याः स्मरण-मात्रेण सर्व-पाप-प्रणाशनम् ॥

त्वं देवी त्वं जगन्माता त्वमेवासि वसुन्धरा।
गायत्री त्वं च सावित्री गङ्गा त्वं च सरस्वती ॥

वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा

आगच्छ देवि कल्याणि शुभां पूजां गृहण च।
वत्सेन सहितां त्वां वै देवीमावाहयाम्यहम्॥

गोमातरम् आवाहयामि।

१. शृङ्खमूलयोः ब्रह्मविष्णुभ्यां नमः, ब्रह्मविष्णू आवाहयामि।
२. शृङ्खाग्रे सर्वतीर्थेभ्यो नमः, सर्वतीर्थानि आवाहयामि।
३. शिरोमध्ये महादेवाय नमः, महादेवम् आवाहयामि।
४. ललाटाग्रे गौर्यै नमः, गौरीम् आवाहयामि।
५. नासावंशे षण्मुखाय नमः, षण्मुखम् आवाहयामि।
६. नासापुटयोः कम्बलाश्वतराभ्यां नागाभ्यां नमः, कम्बलाश्वतरौ नागौ आवाहयामि।
७. कर्णयोः अश्विभ्यां नमः, अश्विनौ आवाहयामि।
८. नेत्रयोः शशिभास्कराभ्यां नमः, शशिभास्करौ आवाहयामि।
९. दन्तेषु वायुभ्यो नमः, वायून् आवाहयामि।
१०. जिह्वायां वरुणाय नमः, वरुणम् आवाहयामि।
११. हुङ्कारे सरस्वत्यै नमः, सरस्वतीम् आवाहयामि।
१२. गण्डयोः मासपक्षाभ्यां नमः, मासपक्षौ आवाहयामि।
१३. ओष्ठयोः सन्ध्या-द्वयाय नमः, सन्ध्याद्वयम् आवाहयामि।
१४. ग्रीवायाम् इन्द्राय नमः, इन्द्रम् आवाहयामि।
१५. कक्षदेशे रक्षोभ्यो नमः, रक्षांसि आवाहयामि।
१६. उरसि साध्येभ्यो नमः, साध्यान् आवाहयामि।
१७. जह्नासु धर्माय नमः, धर्मम् आवाहयामि।
१८. खुराणां मध्येषु गन्धर्वेभ्यो नमः, गन्धर्वान् आवाहयामि।
१९. खुराणां पूर्वाग्रेषु पन्नगेभ्यो नमः, पन्नगान् आवाहयामि।
२०. खुराणां पश्चिमाग्रेषु अप्सरोभ्यो नमः, अप्सरस आवाहयामि।
२१. पृष्ठे एकादशरुद्रेभ्यो नमः, एकादशरुद्रान् आवाहयामि।
२२. सर्वसन्धिषु अष्टवसुभ्यो नमः, अष्टवसून् आवाहयामि।
२३. श्रोणीतटे पितृभ्यो नमः, पितृन् आवाहयामि।
२४. पुच्छे सोमाय नमः, सोमम् आवाहयामि।
२५. अधोगात्रेषु द्वादशादित्येभ्यो नमः, द्वादशादित्यान् आवाहयामि।

वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा

9884655618

8072613857

vdspsabha@gmail.com

vdspsabha.org

२६. वालेषु सूर्यरश्मिभ्यो नमः, सूर्यरश्मीन् आवाहयामि।
 २७. गोमूत्रे गङ्गायै नमः, गङ्गाम् आवाहयामि।
 २८. गोमये यमुनायै नमः, यमुनाम् आवाहयामि।
 २९. क्षीरे सरस्वत्यै नमः, सरस्वतीम् आवाहयामि।
 ३०. दधनि नर्मदायै नमः, नर्मदाम् आवाहयामि।
 ३१. घृते वह्ये नमः, वह्निम् आवाहयामि।
 ३२. रोमसु त्रयस्त्रिंशत्कोटिदेवेभ्यो नमः, त्रयस्त्रिंशत्कोटिदेवान् आवाहयामि।
 ३३. उदरे पृथिव्यै नमः, पृथिवीम् आवाहयामि।
 ३४. स्तनेषु चतुर्भ्यः सागरेभ्यो नमः, चतुरः सागरान् आवाहयामि।
 ३५. सर्वशरीरे कामधेनवे नमः, कामधेनुम् आवाहयामि।

नाना-रत्न-समायुक्तं कार्तस्वर-विभूषितम्।
 आसनं ते मया दत्तं गृहण जगदम्बिके॥

गोमात्रे नमः, आसनं समर्पयामि।

सौरभेयि सर्व-हिते पवित्रे पाप-नाशिनि।
 गृहण त्वं मया दत्तं पाद्यं त्रैलोक्य-वन्दिते॥

गोमात्रे नमः, पाद्यं समर्पयामि।

देहे स्थिताऽसि रुद्राणि शङ्करस्य सदा प्रिया।
 धेनु-रूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु॥

गोमात्रे नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

या लक्ष्मीः सर्व-भूतेषु या च देवेष्ववस्थिता।
 धेनु-रूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु॥

गोमात्रे नमः, आचमनीयं समर्पयामि।

सर्व-देव-मयि मातः सर्व-देव-नमस्कृते।
 तोयमेतत् सुख-स्पर्शं स्नानार्थं गृह्ण¹ धेनुके॥

गोमात्रे नमः, स्नानं समर्पयामि। स्नानोत्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

¹अयं शब्दप्रयोगः पौराणिकः अतः आर्षः इति भाति।

आच्छादनं गवे दद्यां सम्यक् शुद्धं सुशोभनम्।
सुरभिर्वस्त्र-दानेन प्रीयतां परमेश्वरी॥

गोमात्रे नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

सर्व-देव-प्रियं देवि चन्दनं चन्द्र-सन्निभम्।
कस्तूरी-कुङ्कुमाद्यं च सुगन्धं प्रतिगृह्यताम्॥

गोमात्रे नमः, दिव्य-परिमल-गन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्रा-कुङ्कुमं समर्पयामि।

अक्षताश्च सुर-श्रेष्ठे कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहण परमेश्वरि॥

गोमात्रे नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

गोमात्रे नमः, शृङ्ख-भूषणं, कण्ठ-भूषणं, दोहन-पात्रम्, अन्यच्च यथा-शक्ति अलङ्कार-द्रव्यं समर्पयामि।

पुष्प-मालां तथा जाती-पाटली-चम्पकानि च।
पुष्पाणि गृह्ण धेनो त्वं सर्व-विघ्न-प्रणाशिनि॥

गोमात्रे नमः, पुष्प-मालां समर्पयामि।

लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावलिः (८ पृ ६)

गोमात्रे नमः, नाना-विघ-परिमल-पत्र-पुष्पाणि समर्पयामि।

देव-द्रुम-रसोद्भूतं गो-घृतेन समन्वितम्।
प्रयच्छामि महाभागे धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

गोमात्रे नमः, धूपम् आद्यापयामि।

आनन्द-दः सुराणां च लोकानां सर्वदा प्रियः।
गौरस्त्वं पाहि जगन्मातः, दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

गोमात्रे नमः, दीपं दर्शयामि।

सुरभिर्वैष्णवी माता नित्यं विष्णु-पदे स्थिता।
ग्रासं गृह्णातु सा धेनुर्याऽस्ति त्रैलोक्य-वासिनी॥

वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा

गोमात्रे नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। गो-ग्रासं समर्पयामि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

नीराजनं गृहाणेदं कपूरैः कलितं मया।
कामधेनु-समुद्धूते सर्वाभीष्ट-फल-प्रदे॥

गोमात्रे नमः, नीराजनं दर्शयामि।

गोभ्यो यज्ञाः प्रवर्तन्ते गोभ्यो देवाः समुत्थिताः।
गोभ्यो वेदाः समुत्कीर्णाः स-षड्ङ-पद-क्रमाः॥

गोमात्रे नमः, पुष्पाङ्गलिं समर्पयामि।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर-कृतानि च।
तानि नाशय धेनो त्वं प्रदक्षिणपदे पदे॥

॥ प्रार्थना --- गोमती विद्या ॥

गावः सुरभ्यो नित्यं गावो गुण्गुलु-गन्धिकाः।
गावः प्रतिष्ठा भूतानां गावः स्वस्त्ययनं महत्॥ ५० ॥

अन्नमेव परं गावो देवानां हविरुत्तमम्।
पावनं सर्व-भूतानां क्षरन्ति च वहन्ति च॥ ५१ ॥

हविषा मन्त्र-पूतेन तर्पयन्त्यमरान् दिवि।
ऋषीणाम् अग्निहोत्रेषु, गावो होमे प्रतिष्ठिताः॥ ५२ ॥

सर्वेषामेव भूतानां गावः शरणमुत्तमम्।
गावः पवित्रं परमं गावो मङ्गलमुत्तमम्।
गावः स्वर्गस्य सोपानं गावो धन्याः सनातनाः॥ ५३ ॥

नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च।
नमो ब्रह्म-सुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः॥ ५४ ॥

ब्राह्मणाश्रैव गावश्च कुलमेकं द्विधा स्थितम्।
एकत्र मन्त्रास्तिष्ठन्ति हविरेकत्र तिष्ठति॥ ५५ ॥

वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा

देव-ब्राह्मण-गो-साधु-साध्वीभिः सकलं जगत्।
धार्यते वै सदा तस्मात् सर्वे पूज्यतमाः सदा ॥५६॥

यत्र तीर्थे सदा गावः पिबन्ति तृष्णिता जलम्।
उत्तरन्ति पथा येन स्थिता तत्र सरस्वती ॥५७॥

गवां हि तीर्थे वसतीह् गङ्गा
पुष्टिस्तथा तद्-रजसि प्रवृद्धा।
लक्ष्मीः करीषे प्रणतौ च धर्मः
तासां प्रणामं सततं च कुर्यात् ॥५८॥

॥ इति श्रीविष्णुधर्मोत्तरे द्वितीयखण्डे मार्कण्डेयवज्रसंवादे गोमाहात्म्ये गोमतीविद्या
नाम द्विचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ॥

॥ अन्ये प्रार्थना-श्लोकाः ॥

गावो माम् उपतिष्ठन्तु हेम-शृङ्खः पयोमुचः।
सुरभ्यः सौरभेष्यश्च सरितः सागरं यथा ॥ १ ॥

गा वै पश्यान्यहं नित्यं गावः पश्यन्तु मां सदा।
गावोऽस्माकं वयं तासां यतो गावस्ततो वयम् ॥ २ ॥

एवं रात्रौ दिवा वाऽपि समेषु विषमेषु च।
भयेषु च नरो नित्यं कीर्तयन् मुच्यते भयात् ॥ ३ ॥

घृत-क्षीर-प्रदा गावो घृत-योन्यो घृतोद्धवाः।
घृत-नद्यो घृतावर्तास्ता मे सन्तु सदा गृहे ॥ ४ ॥

घृतं मे हृदये नित्यं घृतं नाभ्यां प्रतिष्ठितम्।
घृतं मे सर्वतश्चैव घृतं मे मनसि स्थितम् ॥ ५ ॥

गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः।
गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम् ॥ ६ ॥

इत्याचम्य जपन् प्रातः सायं वा पुरुषस्तथा।
यद् रात्र्या कुरुते पापं तद् रात्र्या प्रतिमुच्यते।
यद् अहा कुरुते पापं तद् अहा प्रतिमुच्यते ॥ ७ ॥

वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा

गोमात्रे नमः, प्रार्थनाः समर्पयामि।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि ॥
अनेन पूजनेन गोमाता प्रीयताम्।

ॐ तत् सद् ब्रह्मार्पणमस्तु।

धर्म की जय हो! अधर्म का नाश हो! प्राणियों में सद्गवना हो! विश्व का कल्याण हो! गौ हत्या बन्द हो! गौ माता की जय हो!
(– पूज्य करपात्र स्वामी जी)



॥ अनुबन्धः ॥

गोशारीरे यत्र यत्र या या देवता वर्तन्ते
इत्यत्र प्रमाणश्लोकाः हेमाद्रौ भविष्ये

(अत्र वसूनां रुद्राणाम् अश्विनोश्च उक्तत्वात् अनुक्ताः “अधोगात्रेषु द्वादशादित्याः”
अवशिष्ट-पूरणाय गीता-मुद्रणालय-प्रामाण्येन पूर्वत्र योजिताः ।)

शृङ्गमूले गवां नित्यं ब्रह्मविष्णू समाश्रितौ।
शृङ्गाग्रे सर्वतीर्थानि स्थावराणि चराणि च ॥ १ ॥

शिरोमध्ये महादेवः सर्वदेवमयः स्थितः।
ललाटाग्रे स्थिता गौरी नासावंशे च षण्मुखः ॥ २ ॥

कम्बलाश्वतरौ नागौ नासापुटमुपाश्रितौ।
कर्णयोरश्विनौ देवौ चक्षुषोः शशिभास्करौ ॥ ३ ॥

दन्तेषु वायवः सर्वे जिह्वायां वरुणः स्थितः।
सरस्वती च हुङ्कारे मासपक्षौ च गण्डयोः ॥ ४ ॥
वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा

सन्ध्याद्वयं तथौष्ठाभ्यां ग्रीवामिन्द्रः समाश्रितः।
रक्षांसि कक्षदेशे तु साध्याश्चोरसि संस्थिताः ॥५॥

चतुष्पात् सकलो धर्मः स्वयं जड्डासु संस्थितः।
खुरमध्ये तु गन्धर्वाः खुराग्रेषु च पन्नगाः ॥६॥

खुराणां पश्चिमाग्रेषु गणा ह्यप्सरसां स्थिताः।
रुद्राश्चैकादश पृष्ठे वसवः सर्वसन्धिषु ॥७॥

श्रोणीतटस्थाः पितरः सोमो लाङ्गूलमाश्रितः।
आदित्यरश्मयो वालाः पिण्डीभूता व्यवस्थिताः ॥८॥

साक्षाद् गङ्गा च गोमूत्रे गोमये यमुना स्थिता।
क्षीरे सरस्वती देवी नर्मदा दध्नि संस्थिता ॥९॥

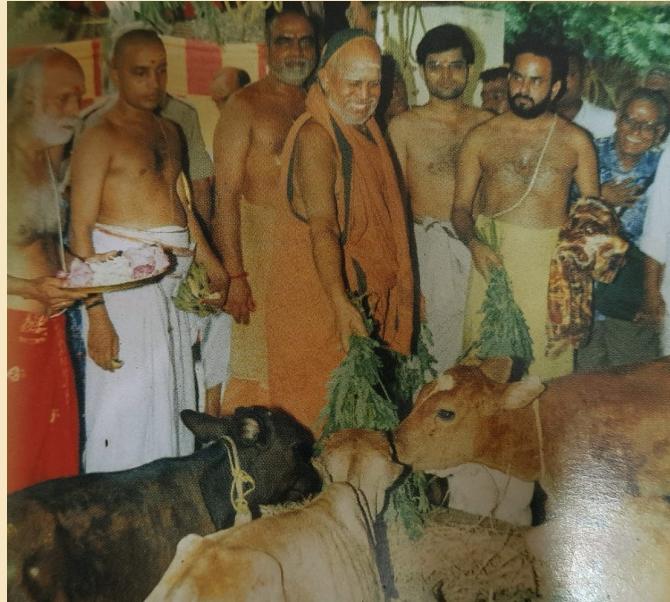
हुताशनः स्वयं सर्पिर्ब्राह्मणानां गुरुः परः।
[अष्टाविंशतिः]त्रयस्त्रिंशत् तु देवानां कोट्यो रोमसु संस्थिताः ॥१०॥

उदरे पृथिवी झेया सशैलवनकानना।
चत्वारः सागराः पूर्णा गवां ये तु पयोधराः ॥११॥

एतद् वः कथितं सर्वं यथा गोषु प्रतिष्ठितम्।
जगद् वै देवशार्दूल सदेवासुरमानवम् ॥१२॥



को॒लम॒मर॒क्षण॑म् गु॒रि॒त्तु ज॒क्तं॒कुरु प॒र्णे॒ सं॒करप॒कव॒त्पा॒ता॒सा॒र्य॒
परम्परा॒कृत् प॒र्णे॒ का॒र्ण्चै॒ का॒मको॒टि॒ मूला॒मना॒य॒ सर्वव॒ज्ञु॒ पी॒टाती॒पति॒ ज॒क्तं॒कुरु॒
प॒र्णे॒ज्येन्त्र॒र॒ सर्वस्वते॒ सं॒करा॒सा॒र्य॒ स्वा॒मिक॒नी॒ आ॒ज्ञगे॒



- "गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दशा" - कोविन्स चर्हत्तील अनेत्तुलकुम विलान्कुकीरतु. अतनालं कोवेप्प प्रतक्षणिमं चेयतालं अनेत्तुलकामुम प्रतक्षणिमं चेयत पलन्स कीट्टुम.
- तायप्पालं अरुन्तुवते विट्टवुटनं उलकिन्स अनेत्तु मतत्तीनरीन्स कुम्नंतेतकानुमं कोमाताविन्स पाले अरुन्तुकिन्ऱन.
- इतनालं कोमाम्सत्तेत साप्पीटुपवन्स तन्स तायिन्स मामिसत्तेत उन्पत्तर्कु सममान्स पावत्तेत अटेकीरान्स.
- कोमातावेक्स केालवतु बेगुम्पावन्कानुकुल्स ओन्ऱाक सास्त्रत्तील चेाल्लप्पटुकीरतु.
- वयतान्स अन्नेनकु चेवे चेयवतु एप्पटि नम कटमे आकीरतेऽ अतेपोल पालं वर्त्रीय कोमाताक्कलेक्क कात्तु अवेकानुकु चेवे चेयवतु अनेत्तु तर्मत्तीनरुम चेय्यवेण्णद्य तवरात कटमेयाकुम.

वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा

📞 9884655618 📧 8072613857 📩 vdspsabha@gmail.com 🌐 vdspsabha.org

- ଛବିବୋରୁ ଲୈଟ୍‌ଟିଲୁମ ତିନମୁମ କୁରେନ୍ତକ ପକ୍ଷମ ଓରୁ କେପପିଟି ପୁଲ୍‌ଲୁମ ଚିନ୍ତିତାବୁ ତନମୁମ କୋଚେବେକ୍‌କାକ ତାଣମ ଚେଯ୍ୟ ବେଣ୍ଟୁମ. ଅତନ୍ମୁଲମ ତତ୍‌ତମ ପକୁତିକଣିଲ କଟ୍‌ଟିବେକ୍‌କପ୍‌ପଟ୍ଟ ମାଦୁକଳେ ପାତୁକାତ୍‌ତୁ, ବେଟ୍‌ଟୁବେତ୍‌ରକାକ ଏଟୁତୁଚ ଚେଲ୍‌ଲପ୍‌ପାଟୁମ ମାଦୁକଳେକ କାପ୍‌ପାର୍‌ର ନିତିଯୁତବିଯୁମ ଚେଯ୍ୟବେଣ୍ଟୁମ. ଇତନାଲ ତାଯେକ କାତ୍‌ତତର୍‌କୁ ଚମାନ ପୁଣ୍ୟମ କିଟେକ୍‌କୁମ.
- ମାଦୁକଣିନ ଚର୍ଚୀତିଲ ଅନେନ୍ତତୁ ତେବେତକଣୁମ ଵ୍ସିକ୍‌କିନ୍‌ରନାର. ମୁକ୍‌ଯମାକ ମାଟ୍‌ଟିନ ପିନ୍‌ପକୁତିଯିଲ ଲକ୍ଷ୍ମି ଵ୍ସିକ୍‌କିରାଳ. ଅତନାଲ, କୋବେପ ପୁଜୀପତୁ ଲକ୍ଷ୍ମିଯେଯୁମ ଅନେନ୍ତତୁ ତେବେତକଳେଯୁମ ପୁଜୀପତାକୁମ. ଅତନାଲ ଅବଳ ପ୍ରବେନ୍‌ନମାକିରାଳ.
- ଚେଲ୍‌ଲମ ଏନ୍‌ପତୁ ଅନେନ୍ତତୁ ତର୍‌ମତିନିରୁକ୍‌କୁମ ତେବେ. ଅତନାଲ ଚେଲ୍‌ଲତତେପ ବେରୁବେତ୍‌ରକୁମ ଅତନ ବାର୍‌ଚ୍‌ଚିକ୍‌କୁମ ଅନେନ୍ତତୁ ତର୍‌ମତିନିରୁମ କୋ ପୁଜ୍‌ଜ୍‌ଜ୍ ଚେଯ୍ୟ ବେଣ୍ଟୁମ.
- ମାଟ୍‌ଟିଲିରୁନ୍‌ତୁ କିଟେକ୍‌କୁମ ଛବିବୋରୁ ବସ୍‌ତୁବୁମ ପବିତ୍‌ରମାନତୁ. ପାଲ, ତ୍ୟିର, ନ୍ୟେ, ଚାଣ୍ମ, କୋମୁତରମ ଇବ୍ରରେ ପଞ୍ଚକଳ୍‌ଯମାକକ କୋଳିରୋମ. ଇବ୍ରରେ ଉଟକୋଳିବେତତ ତବିର ଜନ୍ମତୁ ପେରୁମପାଵନ୍‌କଳେ ଅକର୍ର ବେରୁ ବ୍ୟାପିଲଲେ.
- ଏନ୍‌ତ ପାଵମ ନମ ଲୁମପୁକଣିଲୁମ ତୋଳିଲୁମ ଉଳ୍‌ଲାତୋ, ଅତନାଲ ନ୍ରୋଯକଳୋକ ଉରୁଵାକିରତୋ - ମେଲେ ଚୋଲ୍‌ଲପ୍‌ପଟ୍ଟ "ପଞ୍ଚକଳ୍‌ଯମ" ଅବର୍ତ୍ତକୁମ ରାମପାଣ୍‌ତତେପ ପୋଣ୍‌ର ଚିନ୍‌ତମ ମରୁନ୍‌ତୁ.
- ମାଟ୍‌ଟୁକୁମ ଉଣ୍ଣଣିବୁମ ଅରୁନ୍‌ତବୁମ ନଲଲ ପୋରୁଟକଳେକ କୋଟୁତାଲ ଇମ୍‌ମରୁନ୍‌ତୁ ମେଲୁମ ନନ୍ରାକ ବେଲେ ଚେଯ୍ୟମ
- ପକବାନ ପୂର୍ଣ୍ଣାମରିନ ମୁତାତେଯରାନ ରାଜ୍‌ଜା ତିଲେପନ ଲଲା ଇଟଙ୍‌କଣିଲୁମ ନିରାଶେ ଅଟେନ୍‌ତୁ କଟେଚିଯିଲ କୋମାତାବିର୍‌କୁ ଚେବେ ଚେଯ୍ୟ ରକ୍ତ ମହାରାଜଙ୍କ ପୋଣ୍‌ର ପୁତ୍ର ରତ୍ନତତେପ ପେର୍ରାନ.

କୋମାତା - ନମ ଅନ୍ନନ

ଵେଦ-ଧର୍ମ-ଶାସ୍ତ୍ର-ପରିପାଳନ-ସଭା

कुम्हनंतेत पिऱ्नंतत्तु मुतल अठन्त ताय अठर्गुप पा॒लुट्टुकीरा॒र्. अठर्गुप्पिन्त को॒मा॒ता॒विन्पा॒लेत ता॒न्त अ॒क्कु॒म्हनंतेतक्कु अ॒णी॒क्की॒न्ऱनर्. वे॒रेन्त प्रा॒णी॒यिन्पा॒लेयु॒म ना॒म कु॒म्हनंतेतक्कु॒त तरु॒वती॒ल्लै. आ॒तला॒ल नमक्कु उ॒यिर अ॒णी॒त्तवै॒ल मु॒क्यमा॒क नम अ॒न्नै अ॒ता॒वतु बे॒र्त्र अ॒न्नै. इ॒रन्न॒टा॒वतु अ॒न्नै को॒मा॒ता॒. अ॒ठना॒ल ना॒म बे॒र्त्र अ॒न्नैयि॒टम ए॒व्वै॒ल अ॒न्पु॒ से॒लु॒त्तुकी॒रो॒मो अ॒ते॒ पो॒ल को॒मा॒ता॒वि॒टमु॒म अ॒न्पु॒ से॒लु॒त्तुवे॒ोम.

को॒मा॒ता॒ - अ॒न्नै म॒ह्ना॒लक्ष्मी॒

को॒मा॒ता॒विन्पा॒ल्वै॒वो॒र अ॒ंकत्ती॒लु॒म ते॒वतेतकै॒ल वा॒सम चे॒यकी॒न्ऱनर्. ए॒न्त उ॒यर्न्त ते॒वतेत्या॒ना॒लु॒म ना॒म पि॒न्पकु॒ती॒येप्पु॒ज्जिप्पती॒ल्लै. आ॒ना॒ल को॒मा॒ता॒विन्पा॒ल्पकु॒ती॒यिल लक्ष्मी॒ल वा॒सम चे॒यकी॒रा॒ल. अ॒ठना॒ल को॒विन्पा॒ल्पकु॒ती॒येप्पु॒ज्जिक्की॒रो॒म.

अ॒नेवरु॒म को॒मा॒ता॒वैरक्षी॒क्क वे॒न्न॒मु॒म

को॒मा॒ता॒विन्पा॒ल्स्मरक्षी॒ज्जी॒त्ती॒ना॒ल अ॒नेवरु॒म लक्ष्मी॒यिन्पा॒क्कु॒पै॒क्कु॒प पा॒त्ती॒र्म आ॒वार्कै॒ल. लक्ष्मी॒यिन्पा॒ल्स्मरक्षी॒ज्जी॒त्ती॒ना॒ल अ॒नु॒क्कर॒हृत्तै॒तप्पे॒र वि॒रु॒म्पा॒त्वै॒र्व इ॒व्वै॒लकी॒ल ए॒वरो॒नु॒म उ॒ल्लै॒नरो॒? अ॒ठना॒ल या॒दीर्लै॒ला॒म लक्ष्मी॒यिन्पा॒ल्स्मरक्षी॒ज्जी॒त्ती॒ना॒ल अ॒नु॒क्कर॒हृत्तै॒तप्पे॒र वि॒रु॒म्पु॒की॒रा॒र्कै॒लो॒ अ॒वर्कै॒ल कृ॒ट्टा॒यमा॒क को॒मा॒ता॒विन्पा॒ल्स्मरक्षी॒ज्जी॒त्तै॒तस्च चे॒य्य वे॒न्न॒मु॒म.

को॒वतेत्या॒ना॒ल उ॒न्न॒टाकु॒म तै॒मेकै॒ल

को॒मा॒ता॒विन्पा॒ल वतेत अ॒न्नै लक्ष्मी॒य वतेतप्पतेतप्पे॒र पो॒न्ऱतु. अ॒न्नै लक्ष्मी॒यिन्पा॒ल वतेत्या॒ल वै॒ट्टी॒लु॒म ना॒ट्टी॒लु॒म नी॒ति नी॒लेमै॒सी॒र्कु॒न्ऱी॒ चे॒ल्वतेत्ती॒न ना॒सम उ॒न्न॒टाकु॒म.

चे॒ल्वम ना॒समै॒न्ताल अ॒मेती॒यिन्मै॒ परवी॒ कै॒ष्टां॒कै॒ल वा॒लारु॒म. मै॒नी॒त्तु॒क्कु॒ इ॒तेवी॒ट तु॒न्पमै॒ वे॒रेन्नै॒ इ॒रु॒क्क म॒ट्टियु॒म? अ॒ठना॒ल ते॒समै॒ सू॒क्मा॒कवु॒म चा॒न्तमा॒कवु॒म तै॒रु॒प्ती॒या॒कवु॒म इ॒रु॒प्पतै॒र्का॒क को॒वतेत्यै॒ नी॒रु॒त्त वे॒न्न॒मु॒म.

को॒मा॒म्चमै॒ सा॒प्पी॒वतेत वि॒ट्टु॒वि॒टु॒न्कै॒ल

उ॒यिरुै॒ला॒ मै॒नी॒त्तनी॒न्सी॒ सर्वी॒ वा॒र्स्चै॒ उ॒यिरुै॒ला॒ पि॒रा॒णी॒कै॒ली॒न्सी॒ मा॒मि॒स्त्ती॒न्सी॒ आ॒ह्ना॒रत्ता॒ल उ॒न्न॒टाक वे॒न्न॒टाम. नमतु॒ वा॒र्स्चै॒क्का॒क पै॒स्कै॒ल पा॒ल, ने॒य, तै॒यिर मै॒तली॒यन कै॒टु॒त्तु॒ व्यैलु॒क्कु॒ उ॒रमु॒म तै॒न्तु॒

वे॒द-ध॒र्म-शा॒स्त्र-परि॒पालन-सभा॒

उत्तुवुकिऩ्ऱन. इप्पदिप्पपट्ट कोमाताक्कளीन मामिचत्तेत साप्पिट्टवतु एन्पतु एन्ऱुमे चेय्यत्तकाततु.

को मामिचत्तेत उन्नपतु नम अन्नेन्यिन मामिचत्तेत उन्नपतु पोल एन्णनी कोमाम्चत्तेत उन्नपतेत अर्वेव विट्टुविट्वेण्टुम.

पञ्चकव्यत्तेत उन्नपतु महापातकंकणा नैक्कुकिर्तु

नम वाढ्विल उन्नटाकुम नेड्यक्कुम तुन्पत्तिर्कुम कारणम नम्माल चेय्यप्पपट्ट पापंकणो. इवर्हुलं पञ्च महापापम एन्पतुम औन्ऱु. इत्तकेय पावंकणो नैंकुवतर्कु एन्त [एन्नीय] प्रायस्चित्तमुम इल्लै.

कोमाताविन पाल, तयिर, नेड्य, मुत्तरम मर्हुम साणेम इत्तन कलवेव पञ्चकव्यम एन्ऱु अष्टुक्कप्पट्टुकिर्तु. इन्त पञ्चकव्यत्तेत उट्केण्टाल मेले चेल्लप्पपट्ट महापापत्तिर्कुम परिहारमाकुम.

अठनाल अनेन्ततु पावंकणो नैंकुवतर्काक कोसम्रक्षणेम चेय्य वेण्टुम.

मूलम: श्री ज्येन्तर सर्सवति शंकराचार्य स्वामीकणीन को सम्रक्षणे विष्ण्यमान आज्ञेन्त्र (हरिन्तीयिल), मेहता अरक्कट्टणो, पुतु तील्ली



Jagadguru Shri Shankara Bhagavatpadacharya Paramparagata Shri Kanchi Kamakoti Mulamnaya Sarvajnapithadipati Jagadguru Shri Jayendra Saraswati Shankaracharya Swamigal's Ajna regarding Go Samrakshanam



वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा

9884655618

8072613857

vdspsabha@gmail.com

vdspsabha.org

- "गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दशा" - All the worlds are in the body of a cow. Hence circumambulating a cow yields the benefit of circumambulating the entire world.
- Children of all religions in this world drink a cow's milk after they are weaned from their mother's milk.
- Thus the person who eats a cow's flesh attains the sin equal to that of eating the flesh of one's own mother.
- Killing a cow is stated in the shastra as one among the great sins.
- Just as it is our duty to do seva to our elderly mother, likewise it is the infallible duty of those of every religion to protect cows that no longer yield milk and serve them.
- A handful of grass and a small amount of money has to be set aside daily in every household. This is to be used to feed the cows in one's neighbourhood and to help rescue the cows that are taken for slaughter. If the animals are protected in this manner we get the punya of protecting our own mother.
- All the devatas reside in a cow's body. Lakshmi especially resides in the rear portion of a cow. Worshipping a cow is equivalent to worshipping Lakshmi and all devatas. Lakshmi is pleased by this.
- Prosperity is essential for people of all religions. Hence to attain growth and prosperity people of all religions must worship cows.
- Everything that is obtained from a cow is sacred. We call the mixture of milk, curd, ghee, cow dung and cow urine as Panchagavya. There is no other way to remove the great sins other than consumption of Panchagavya.

वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा

9884655618

8072613857

vdspsabha@gmail.com

vdspsabha.org

- For removing the pāpa that resides in our bones and skin and manifests as diseases, panchagavya is the sure medicine like the arrow of Rama (is sure to strike its target).
- If we give quality items to cows to feed and drink, then this medicine will be all the more effective.
- The ancestor of Bhagavan Shrironama, King Dilipa, was disappointed in all quarters, and finally did seva to Gomātā and attain a gem of a son like Raghu Maharaj.

Gomātā - Our mother

From the time a child is born, it drinks its mother's milk. After being weaned, we give only cow's milk to the infant and not that of any other animal. Hence the mother who gives life to us is our birth mother and the gomata is our second mother. Hence we must love Gomātā in the same manner as we love our birth mother.

Gomātā - Mother Lakshmi

Devatas reside in every part of cows. Even for the highest devatas, we do not worship their behind. But Lakshmi resides in the rear side of a Cow. Due to this reason we worship the rear side of a cow.

Everyone must protect Gomātā

As long as people keep protecting the cows, they will gain the anugraha of Lakshmi. Who is there in this world who does not desire the grace of Lakshmi? Hence whoever wishes for the grace of Lakshmi should definitely protect Gomātā.

The ill effects of slaughtering cows

Slaughter of Gomātā is equivalent to slaughter of Mother Lakshmi. When Mother Lakshmi is slaughtered, it leads to financial instability and loss of wealth in the home and the country.

वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा

9884655618

8072613857

vdspsabha@gmail.com

vdspsabha.org

When there is loss of wealth, discontent spreads everywhere and results in increased sufferings. What else would cause humans greater difficulty than this? Hence to keep the nation happy, peaceful and satisfied, we should stop the slaughter of cows.

Stop eating the flesh of cows

The growth of a living human's body should not need the flesh of a living animal. Definitely one should not eat the flesh of the Gomātā who helps us by giving milk, ghee and curds and also manure for our fields and benefits us in every manner.

Understanding that eating cow's flesh is like eating the flesh of one's own mother, one should give up eating of cow's flesh.

Eating of Panchagavya removes great sins

It is our sins that are the cause for the diseases and difficulties in our life. Among these are the five mahapatakas. There is no [easy] prayaschitta for the removal of such pāpas.

The mixture of milk, curd, ghee, urine and dung of a cow is together called Panchagavya. The consumption of this Panchagavya is the parihara for even the abovementioned mahapapa-s.

Hence for removal of all pāpas we should protect the Gomātā!

Source: Shri Jayendra Saraswati Shankaracharya Swamigal's Ajna regarding Go Samrakshanam (Hindi), Mehta Charitable Trust, New Delhi

